23

अष्टाध्यायी अष्टम अध्याय-1

इस पाठ में नुट् के विधान से सम्बन्धित अनेक सूत्रों का उल्लेख करेंगे। किस शब्द से कब नुट् होता है तथा उसकी प्रक्रिया क्या है इस विषय में सविस्तार व्याख्या करेंगे। उसके बाद भुवः प्रातिपदिक से रेफविधान और रुविधान इन दोनों विषयों के वैकल्पिक विधान विषय में आलोचना करेंगे। और भी ओमभ्यादाने इत्यादि सूत्रों से वेद में कैसे स्वरविधान होता है इस विषय को भी स्पष्ट करेंगे। इस पाठ में कहे गये प्रत्ययों का किन अर्थों में प्रयोग होगा ये भी बताएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- नुट आदि प्रत्ययविधान के विषय में स्पष्ट ज्ञान अर्जन कर पाने में;
- वेद में स्वरविधान की प्रक्रिया जान पाने में;
- वेद में विभिन्न प्रातिपदिकों के लिए प्रत्यय होते है, ये भी जान पाने में;
- किन अर्थों में प्रातिपदिकों से प्रत्यय होते है ये जान पाने में।

23.1 प्रसमुपोदः पादपूरणे॥ (8.1.6)

सूत्रार्थ– प्र,सम्, उप उत् उपसर्गों को द्वित्व हो जाता है पाद पूर्ति करनी हो तो।

सूत्राव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से द्वित्व होता है। इस सूत्र में दो पद है। प्रसमुपोदः ये षष्ठ्यन्त पद है। पादपूरणे ये सप्तम्यन्तपद है। ''सर्वस्य द्वे'' इस सूत्र से

टिप्पणी

द्वे पद के अनुवृत्ति आती है। सूत्रार्थ होगा कि प्र, सम्, उप, उद् उपसर्गों का पादपूरण अर्थ में द्वित्वरूप होता है। यहाँ छन्दसि पद का पाठ नहीं है फिर भी लोक में प्र इत्यादि का द्वित्वरूप नहीं दिखता है। इसलिए छन्दसि अर्थात् वेद में ही ये कार्य होता है, ऐसा जानना चाहिए। लोक में तो अधः परि उपरि इनकी ही द्विरुक्ति दिखती है।

उदाहरण- प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे। संसमि द्युवसे वृषन्। उपोप मे परामृश। किं नोदुदु हर्षसे।

सूत्रार्थसमन्वयः– प्रप्रायमित्यादि मन्त्र में त्रिष्टुप्-छन्द है और उसके लिए एकादश अक्षर अपेक्षित है। यहाँ प्र को द्वित्व करने पर ये संख्या पूरी हुई। ऐसे ही संसमि द्युवसे इत्यादि मन्त्र में गायत्रीछन्द होने से अष्ट अक्षर अपेक्षित है। सम् को द्वित्व करने पर ये संख्या पूरी हुई। ऐसे ही उपोप मे परामृश मन्त्र में और नोदुदु हर्षसो मन्त्र में भी जाने।

23.2 छन्दसीरः (8.2.15)

सूत्रार्थः– इवर्णान्त और रेफान्त पद के बाद मतुप् के म के स्थान पर व हो जाए।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से वेद में इवर्णान्तऔर रेफान्तपरक मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होता है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। इरः पञ्चम्यन्त पद है। ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः'' सूत्र से मतोः और वः दो पदों की अनुवृति हुई। ''पदस्य'' की भी अनुवृत्ति हुई। और उस पदात् शब्द से पञ्चम्यन्त का ग्रहण होता है। इरः पदात् का विशेषण होने से तदन्तविधि होती होती है। उससे इवर्णान्तात् रेफान्तात् अर्थ वाले पद बने। अतः सूत्रार्थ होगा कि इवर्णान्त और रेफान्त से उत्तर मतुप्प्रत्यय के मकार के स्थान पर वकार हो जाए।

उदाहरण- हरिवते हर्यश्वाय। गीर्वान्।

सूत्रार्थसमन्वय- हरयः विद्यन्ते यस्य इस विग्रह में हरि जस् इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मतुप्प्रत्यय होने पर हरि जस् मत् इस स्थिति में इस समुदाय के तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा हो ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' सूत्र से सुप् का लुक् होकर हरि मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इकारान्त हरिशब्दात् से परे मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होने पर हरिवत् होने पर प्रातिपदिक होने से चतुर्थ्येकवचन में ङे विभक्ति से हरिवते रूप बना।

गीः अस्ति अस्य विग्रह होने पर गिर् सु प्रथमान्तप्रातिपदिक से मतुप्प्रत्यय में गिर् सु मत् इस स्थिति में समुदाय के तद्धितान्त होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा में ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' सूत्र से सुप् का लुक् होकर गिर् मत् होने पर प्रकृतसूत्र से रेफान्त गिर्-शब्दपरक मतुप्प्रत्यय के मकार के स्थान पर वकार होकर गिर्वत् इस स्थिति में ''र्वोरुपधाया दीर्घ इकः'' सूत्र से उपधा के इक के स्थान पर दीर्घ होकर गीर्वत् तथा प्रातिपदिक होकर प्रथमैकवचन में गीर्वान् रूप बना।

23.3 अनो नुट्॥ (8.2.16)

सूत्रार्थः–अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मतुप् को नुट आगम होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मत् को नुट् आगम होता है। इस सूत्र में दो पद है। अनः पञ्चम्यन्त पद है। नुट् प्रथमान्त पद है। ''छन्दसीरः'' सूत्र से छन्दसि पद की अनुवृत्ति हुई। ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः'' सूत्र से मतोः पद की अनुवृत्ति हुई। ये सूत्र ''पदस्य'' के अधिकार में है और वो पञ्चम्यन्त में बदल जाता है। उसका अन् विशेषण है। विशेषण होने से तदन्तविधि होती है। जिससे अन्नन्तात् ऐसा अर्थ हुआ। अतः सूत्रार्थ होगा कि अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मतुप् को नुट आगम होता है। टित् होने से नुट् हुआ और वो नुट ''आद्यन्तौ टकितौ'' परिभाषा से मतुप्प्रत्यय के आदीभाग को होता है।

उदाहरणम्- अक्षण्वन्तः। कर्णवन्तः। अस्थण्वतं यदनस्था।

सूत्रार्थसमन्वयः- अक्षिणी स्तः अस्य ऐसा विग्रह होने पर अक्षि औ प्रथमान्त शब्द से मतुप्प्रत्यय होकर अक्षि मत् इस स्थिति में ङिच्च इस परिभाषा से परिष्कृत ''छन्दस्यपि दृश्यते'' सूत्र से इकार से उत्तर अनङादेश होकर अक्षन् मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मतुप् को नुडागम और अनुबन्धलोप होने पर अक्षन् न् मत् होकर ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' सूत्र से अक्षन् के नकार के लोप होने पर ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः'' सूत्र से मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होकर ''अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि'' सूत्र से नकार के स्थान पर णत्व होने पर अक्षण्वत् ऐसा रूप होकर प्रथमाबहुवचन में जस् होकर **अक्षण्वतः** रूप बना।

अस्थि अस्ति अस्य इस अर्थ में अस्थि सु इस प्रथमान्त शब्द से मतुप्प्रत्यय होकर अस्थि मत् इस स्थिति में ङिच्च इस परिभाषा से परिष्कृत **छन्दस्यपि दृश्यते** सूत्र से इकार से स्थान पर अनङादेश होकर अस्थन् मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मतुप् होकर नुडागम और अनुबन्धलोप होकर अस्थन् न् मत् बना और नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से अस्थन् के नकार का लोप होने पर मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः सूत्र से मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होकर अस्थन्वत् रूप होकर अम्-विभक्ति में **अस्थन्वतम्** रूप बना।

23.4 नाद्घस्य॥ (8.2.17)

सूत्रार्थः–नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुट् आगम होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुडागम होता है। इस सूत्र में दो पद है। नाद् पञ्चम्यन्त पद है। घस्य षष्ठ्यन्त पद है। ''तरप्तमपौ घः'' सूत्र से तरप्प्रत्यय और तमप्प्रत्यय की घसंज्ञा। ''छन्दसीरः'' सूत्र से छन्दसि पद अनुवृत्ति हुई। ''अनो नुट्'' सूत्र से नुट् पद की अनुवृत्ति। पदस्य का अधिकार। और

टिप्पणी

वो पद पञ्चम्यन्त में बदल जाता है। नाद् पद पदात् का विशेषण होने से तदन्तविधि होती है, जिससे नान्तात् ऐसा अर्थ हुआ। अतः सूत्रार्थ होता है- नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुट् आगम होता है। टित् होने से नुट् **आद्यन्तौ टकितौ** सूत्र से घसंज्ञक पद के आदीभाग में होता है।

उदाहरण- सुपथिन्तरः।

सूत्रार्थसमन्वय- सुपथिन्-शब्द से ''द्विवचनविभज्योपपदे'' सूत्र से तरप्प्रत्यय होकर प्रकृतसूत्र से तरप् से नुडागम आदीभाग को और अनुबन्धलोप होकर सुपथिन् न् तर होकर ''नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' सूत्र से सुपथिन् के नकार का लोप होने पर सुपथिन् तर ऐसा होने पर नकार से उत्तर अनुस्वार होने पर और अनुस्वार के परसवर्ण होने पर सुपथिन्तर होकर सुविभक्ति होने पर **सुपथिन्तरः** रूप बनता है।

23.5 नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि॥ (8.2.61)

सूत्रार्थः– नञ् पूर्वक सद् धातु से और निपूर्वक सद् धातु से निष्ठा से क्तप्रत्यय होने से नत्वाभाव निपातन होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि प्रथमान्त पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र से वेद विषय में नसत्त, निषत्त, अनुत्त, प्रतूर्त, सूर्त, गूर्त ये शब्द निपातन किये जाते है।

उदाहरण- नसत्तमञ्जसा। निषत्तमस्य चरतः।

सूत्रार्थसमन्वयः- नञ्पूर्वक-सद्-धातु से क्तप्रत्यय होने पर प्रक्रियादशा में ''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः'' सूत्र से क्तप्रत्यय के तकार से उत्तर नकार के प्राप्त होने पर इस सूत्र से नत्वाभाव निपातन से है। जिससे **नसत्तम्** रूप बनता है। लोक में तो **असन्नम्** बनता है। इस प्रकार निपूर्वक सद् धातु से क्तप्रत्यय होने पर वेद में **निषत्तम्** रूप होता है। लेकिन लोक में तो **निषण्णम्** ही होता है। नञ्पूर्वकद् धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **अनुत्तम्** रूप बना। लोक में तो **अनुन्नम्** ही रूप होता है। प्रपूर्वक त्वर्-धातु से उया तुर्वी धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **प्रतूर्तम्** रूप बना। लोक में तो **प्रतूर्णम्** रूप बनता है। सृ धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **सूर्तः** रूप बना। लोक में तो सृतम् रूप बनता है। गूरी धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **गूर्तम्** रूप बना। लोक में तो **गूर्णम्** रूप बनता है।

23.6 अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि॥ (8.2.70)

सूत्रार्थ- अम्नस् ऊधस् अवस् इन शब्दों के सकार के स्थान पर वेद विषय में विकल्प से रुत्व होता है और पक्ष में रेफ भी होता है।।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से रु और रेफ दोनों होते है। इस सूत्र में चार पद है। अम्नरूधरवः प्रथमान्त पद है। इति, उभयथा इत्युभयम् ये अव्यय है। छन्दसि सप्तम्यन्तपद है। ''रोऽसुपि'' सूत्र से रः पद की अनुवृत्ति हुई। ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुः की अनुवृत्ति हुई। अम्नर् ऊधर् अवर् यहाँ अम्नस् ऊधस् अम्नस् ऊधस् अवस् इन शब्दों के सकार के स्थान पर वेद विषय में विकल्प से रुत्व होता है द्य पक्ष में रेफ भी होता है। अवस् इन पदों को रुत्व करके निर्देश किया है। उभयथा के ग्रहण से रुत्वाभाव भी होता है, ऐसा जाने। उसको विकल्प से रेफ भी होता है। अतः सूत्रार्थ होता है अम्नस् शब्द ईषद् अर्थ में है। अवः का अर्थ रक्षण है।

उदाहरण- अम्न एव। अम्नरेव। ऊध एव। ऊधरेव। अव एव। अवरेव।

सूत्रार्थसमन्वय- अम्नस् एव ऐसी स्थिति में प्रकृतसूत्र से स के स्थान पर रुत्व होने पर अम्नर एव होकर ''भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि'' सूत्र से र के स्थान पर यकारादेश होकर अम्नय् एव ऐसा होने पर ''लोपः शाकल्यस्य'' सूत्र से यकार का लोप होकर **अम्न** एव रूप बना। पक्ष में अम्नस् एव इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सकार के स्थान पर रेफ होकर **अम्नरेव** रूप होता है।

ऐसे ही ऊधस् एव इसमें रुत्वपक्ष में **ऊधरेव** रूप बना। रेफपक्ष में **ऊध एव** रूप होता है। इसी प्रकार अवस् एव इस स्थिति में रुत्वपक्ष में **अव एव** रूप बना और रेफपक्ष में **अवरेव** रूप बनता है।

23.7 भुवश्च महाव्याहृतेः॥ (8.2.71)

सूत्रार्थ- वेद विषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार के स्थान पर रुत्व होता है और रेफ भी।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से महाव्याहृति भुवस् शब्द के सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ दोनों होते है। इस सूत्र में तीन पद है। भुवः ये षष्ठीप्रतिरूपक अव्ययपद। च अव्ययपद है। महाव्याहृतेः षष्ठ्यन्त पद है। तीन महाव्याहृतियां है- भूः, भुवः और स्वः। इस सूत्र में भुवस् शब्द के ग्रहण से मध्यम का ग्रहण है। भुवः का अर्थ अन्तरिक्ष है। ''अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि'' सूत्र से इति, उभयथा और छन्दसि तीन पदों की अनुवृत्ति हुई। ''रोऽसुपि'' सूत्र से रः पद की अनुवृत्ति हुई। ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुः की अनुवृत्ति। ये सूत्र ''पदस्य'' के अधिकार में है। अलोऽन्त्यस्य परिभाषा यहाँ कार्य करेगी और सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार के स्थान पर रुत्व होता है और रेफ भी।

उदाहरण- भुव इत्यन्तरिक्षम्, भुवरित्यन्तरिक्षम्।

सूत्रार्थसमन्वय- भुवस् इति इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से रुत्व होकर भुवर् इति और

टिप्पणी

''भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि'' सूत्र से र के स्थान पर यकारादेश होने पर भुवय् इति बना। ''लोपः शाकल्यस्य'' सूत्र से यकार का लोप होने पर **भुव इति** रूप बना। पक्ष में भुवस् इति इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से सकार के स्थान पर रेफ होने पर **भुवरिति** रूप भी बनेगा।

विशेष- प्रकृतसूत्र से भुवस् महाव्याहृति में ही सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ होता है। महाव्याहृति से भिन्न भुवस्-शब्द के सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ नहीं होता है। इस प्रकृतसूत्र में महाव्याहृतेः पद के ग्रहण से ही ये ज्ञात होता है। जैसे ''भुवो विश्वेषु सवनेषु'' मन्त्र में भुवः तिङन्त पद है न कि महाव्याहृतिसंज्ञक। अतः यहाँ भुवस् के सकार के स्थान पर प्रकृतसूत्र से रुत्व या विसर्ग नहीं होता है। वैसे ही भू धातु में ''छन्दसि लुङ्लङ्लिटः'' सूत्र से वर्तमान में लङ, सिप् और शप् होने पर तथा वेद विषयक होने से गुणाभाव होकर भू अ सि इस स्थिति में उवङादेश होकर भुवसि रूप तथा इतश्च सूत्र से सकारोत्तर इकार के लोप होने पर भुवस् और सकार के स्थान पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुत्व और विसर्ग होने पर **भुवः इति** रूप बना।

23.8 ओमभ्यादाने॥ (8.2.87)

सूत्रार्थः- ओम्शब्द को प्लुत हो आरम्भ में॥

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से ओम्-शब्द को प्लुत होता है। इस सूत्र में दो पद है। ओम् प्रथमान्त पद है। अभ्यादाने सप्तम्यन्त पद है। ''वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः'' सूत्र से प्लुतः पद की अनुवृत्ति हुई। अभ्यादान अर्थात् प्रारम्भ में ओम् प्लुत हो। अभ्यादन का अर्थ प्रारम्भ है। यहाँ किसके प्रारम्भ की बात की गई है, तो कहते है- स्वाध्याय या मन्त्र के प्रारम्भ की। तो सूत्रार्थ हुआ कि ओम्शब्द को प्लुत हो आरम्भ में। अचश्च सूत्र से ओम् के ओकार के ही स्थान पर प्लुत होवें ऐसा जानना चाहिए। त्रिमात्रिक अच् की प्लुतसंज्ञा होती है। इस विषय में कहा है-

''एकमात्रो भवेद्ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनञ्चार्धमात्रकम्॥'' इतिम॥

उदाहरण- ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितम्।

सूत्रार्थसमन्वय- ऋग्वेदीय अग्निसूक्त ''अग्निमीळे पुरोहितम्'' मन्त्र से आरम्भ होता है। अतः उसका पूर्ववर्ति होने से ओम् के ओकार को प्लुत होता है प्रकृतसूत्र से।

विशेष- जहां मन्त्र के प्रारम्भ में ओम्शब्द नहीं होता वहां प्लुत भी नहीं होता है। यथा ओमित्येकाक्षरम् इस श्लोक के प्रारंभ में ओम्शब्द है। अतः यहां प्लुत नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-23.1

1. प्र सम् उप उत् इनको द्वित्व कब होता है?
2. वेद में इवर्णन्त और रेफान्त शब्द से मतुप् के म् के स्थान पर व किस सूत्र से होता है?
3. अक्षण्वन्तः में नुडागम किस सूत्र से होता है?
4. ''नाद्धस्य'' सूत्र से क्या होता है?
5. अम्नरेव का वैकल्पिक रूप ह्या होगा?
6. महाव्याहृतियां कौन सी है?
7. ओम्शब्द के स्थान पर प्लुत कब होता है?।

23.9 छन्दसि घस्॥ (5.1.106)

सूत्रार्थ- ऋतुशब्द से तद् अस्य प्राप्तम् इस अर्थ में घस्-प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है और इसमें वैषयिकसप्तमी है। घस् प्रथमान्त पद है। **समयस्तदस्य प्राप्तम्** सूत्र से तत् प्रथमान्तंपद, अस्य षष्ठ्यन्तपद और प्राप्तम् प्रथमान्त पदों की अनुवृत्ति हुई। ऋतोरण् सूत्र से ऋतोः पञ्चम्यन्तपद की अनुवृत्ति हुई। प्रत्ययः और परश्च सूत्रों का अधिकार। अतरू सूत्रार्थ हुआ कि तत् अस्य अस्ति अर्थ में ऋतुशब्द से परे घस्प्रत्यय होता है छन्दसि विषय में। ये ऋतोरण् सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण- भाग ऋत्वियः।

सूत्रार्थसमन्वय- तदस्य अस्ति इस अर्थ में ऋतुशब्द से ऋतोरण् से अण के प्राप्त होने पर उसे बाध कर प्रकृतसूत्र से घस्प्रत्यय होकर सकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः से लोप करने पर ऋतु घ इस स्थिति में घस् के सित् होने से सिति च सूत्र से पदसंज्ञा होने पर पदसंज्ञा का घसंज्ञापवाद होने से ओर्गुणः से गुण के अप्राप्त होने पर इको यणचि सूत्र से उकार के स्थान पर यणादेश और वकार होकर ऋत् व् घ इस स्थिति में घकार के स्थान पर अनेकाल् शित् सर्वस्य परिभाषा द्वारा आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से इयादेश होकर ऋत् व इय् अ इस स्थिति में सब वर्णों को मिलाकर ऋत्विय समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई। स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशतिस्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में सु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप होकर ऋत्विय

टिप्पणी

स् इस स्थिति में स् के स्थान पर ससजुषो रु: से रुत्व और अनुबन्धलोप होने पर ऋत्विय र् बना, अब रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीय: सूत्र से विसर्ग होकर ऋत्विय: रूप सिद्ध हुआ।

23.10 मये च (4.4.138)

सूत्रार्थ:- वेदविषय में सोमशब्द से य प्रत्यय होता है। विकार और अवयव में मयट् प्रत्यय को आगत और प्रकृत अर्थ में कहा है।।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। मये सप्तम्यन्त पद और च अव्ययपद है। सोममर्हति य: सूत्र से सोमम् और य: पदों की अनुवृत्ति हुई, सोमम् पद पञ्चम्यन्त अर्थ का प्रतिपादक होने सोमात् पद बना। भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि सप्तम्यन्तपद की अनुवृत्ति हुई। तद्धिता:, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, और परश्च सूत्रों का अधिकार है। छन्दसि में वैषयिक सप्तमी है। अतरू सूत्रार्थ हुआ– वेदविषय में सोमशब्द से य प्रत्यय होता है विकार और अवयव में मयट् प्रत्यय को आगत और प्रकृत अर्थ में कहा है।

सूत्रार्थसमन्वय- सोम्यं मधु।

उदाहरण– सोमशब्द से तद्धितसंज्ञक मयडर्थक य प्रत्यय होने पर सोम य इस स्थिति में मकारोत्तर अकार के लोप होकर सोम्य, इस स्थिति में समुदाय के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च के अधिकार में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र में खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु के स्थान पर अतोऽम् सूत्र से अमादेश होने पर अमि पूर्व: से पूर्वरूप एकादेश होकर सोम्यम् रूप सिद्ध हुआ।

23.11 विचार्यमाणानाम्।। (8.2.97)

सूत्रार्थ:- विचार्यमाण वाक्यों के टिभाग को प्लुत स्वर होता है।

सूत्रावतरणम्- वेदे विचार्यमाणानां वाक्यानां टिभागस्य प्लुतविधानार्थं सूत्रमिदं प्रणीतमाचार्येण।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विचार्यमाण वाक्यों के के टिभाग को प्लुत उदात्त होता है। इस सूत्र में एक ही पद है। विचार्यमाणानाम् षष्ठीबहुवचनान्त पद है। यहाँ वाक्यस्य टे: और प्लुत उदात्त: सूत्र से टे: षष्ठी एकवचनान्त पद और प्लुत: प्रथमा एकवचनान्त पद अनुवृत्त हुए। वाक्य के वाचक वर्तमान पद के विभक्ति विपरिणाम होने से वाक्यानाम् रूप बना। अतरू पदयोजना– विचार्यमाण वाक्यों के टी को प्लुत उदात्त होता है। इसलिए सूत्रार्थ होगा कि- विचार्यमाण वाक्यों के टिभाग को प्लुत स्वर होता है।

उदाहरण- होतव्यं दीक्षितस्य गृहा3 इ इति।

सूत्रार्थसमन्वय- होतव्यं दीक्षितस्य गृहा3 इ इस वाक्य में गृहे (गृह इ) इस स्थिति में प्रकृतसूत्र के सहचर्य से एचोऽप्रगृहस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ सूत्र से गृह- शब्द के अकार के स्थान पर प्लुत होने पर आ3कारे गृहा3 होने पर दूराद्धूते च सूत्र से उसमे सन्धि के अभाव में गृहा3 इ रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार होतव्यम् अथवा न होतव्यम् आदि में विचार्यमाण वाक्य होने पर प्रकृतसूत्र से प्लुत स्वर होता है।

23.12 नित्यं छन्दसि (4.1.46)

सूत्रार्थ- बह्वादि अनुपसर्जन प्रतिपदिकों से स्त्रीलिंग में नित्य ङीष् प्रत्यय होता है वेदविषय में।

सूत्रावतरण- लोक में बह्वादिभ्यश्च सूत्र से बह्वादियों में विकल्प से ङीष्- प्रत्यय होता है। ये सूत्र वेद में तो बह्वादियों से ङीष्- प्रत्यय नित्य विधान करने वाला है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से वेद में बह्वादि प्रतिपदिकों से नित्य ङीष- प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में नित्यम् प्रथमान्त पद और छन्दसि विषयसप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में अन्यतो ङीष् सूत्र से ङीष् प्रथमान्त प्रत्ययबोधक पद की अनुवृत्ति हुई। ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पद यहाँ वचन के परिवर्तन होने से प्रातिपदिकेभ्यः रूप बना। अनुपसर्जनात् इस पद का यहाँ वचन भेद से अनुपसर्जनेभ्यः रूप बना। स्त्रियाम्, प्रत्ययः और परश्च इन तीनों पदों का अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- अनुपसर्जनेभ्यः बह्वादिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः परः नित्यं ङीष् प्रत्ययः स्त्रियाम् इति। अतरू सूत्रार्थ होता है - बह्वादि अनुपसर्जन प्रतिपदिकों से स्त्रीलिंग में नित्य ङीष् प्रत्यय होता है वेद विषय में।

उदाहरणम्- बह्वी।

सूत्रार्थसमन्वयः- बह्वादिगण में पठित बहु शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होकर प्रकृतसूत्र से ङीष-प्रत्यय हुआ। ङीष्-प्रत्यय के आदी ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्रण से इत्संज्ञा और षकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से षकार और ङकार का लोप होकर बहु ई इस स्थिति में उकार के स्थान पर इको यणचि सूत्र से यणादेश वकार होकर बह्वी बना। उस बह्वी-शब्द के ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार से वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा से सुप्रत्यय होकर बह्वी सु। पाणिनीय प्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का

टिप्पणी

लोप होकर बह्वी स् ऐसी स्थिति होने पर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से ङ्यन्त के परे सकार का लोप होकर **बह्वी** रूप सिद्ध होता है।

23.13 मायायामण् (4.4.124)

सूत्रार्थ- असुर की अपनी माया अभिधेय हो तो षष्ठी समर्थ असुर प्रातिपदिक से अण्-प्रत्यय होता है वेद विषय में।

सूत्रावतरण- असुर प्रातिपदिक से मायार्थ में अण-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र है।

सूत्राव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे अण-प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। मायायाम् सप्तम्यन्त पद और अण् प्रथमान्त पद है। असुरस्य स्वम् सूत्र से असुरस्य षष्ठ्यन्त पद और स्वम् प्रथमान्त पद, भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि विषयसप्तम्यन्त पद, अग्राद्यत् सूत्र से यत् प्रथमान्त पद और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पदों की अनुवृत्ति हुई। तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च तीनों सूत्रों का अधिकार भी है। इस सूत्र में असुरस्य षष्ठ्यन्त पद, असुरात् पञ्चमी एकवचनान्त में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार पदयोजना हुई– छन्दसि असुरात् प्रातिपदिकात् परः मायायाम् अण्-प्रत्ययः इति। अर्थात्- असुर की अपनी माया अभिधेय हो तो षष्ठी समर्थ असुर प्रातिपदिक से अण्-प्रत्यय होता है वेद विषय में।

उदाहरणम्- आसुरी माया।

सूत्रार्थसमन्वयः- असुर-शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई **मीयते अनया इति माया** असत् अर्थ के प्रकाशन की शक्ति। उस वाच्य अर्थ में असुर प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अण्-प्रत्यय होकर असुर अण् हुआ। अण्-प्रत्यय के अन्तिम णकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः सूत्र से लोप होकर असुर अ बना और तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से असुरशब्द के आदी अकार को वृद्धी आकार होकर आसुर अ। यचि भम् सूत्र से आसुरशब्द की भसंज्ञा होकर यस्येति च सूत्र से आसुर के अन्त्य अकार लोप होने पर आसुर् अ इति सभी वर्णसम्मेलन होकर आसुर शब्द बना तथा अब अण्- प्रत्ययान्त होने से आसुर-शब्द के स्त्रीत्वविवक्षा में टिड्-ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः सूत्र से ङीप्-प्रत्यय तथा ङीप्-प्रत्यय के आदी ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा और पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से पकार और ङकार का लोप होने पर आसुर ई होकर आसुर-शब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होकर उसके अन्त्य अकार की यस्येति च सूत्र से लोप हुआ। सभी वर्णों के मेल से आसुरी बना तथा ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात् से प्रातिपदिक संज्ञा, स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा

टिप्पणी

में सुप्रत्यय होने पर आसुरी सु इस स्थिति में पाणिनीयप्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होकर आसुरी स् होने पर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से ङ्यन्त से परसकार का लोप होकर **आसुरी** रूप सिद्ध हुआ।

23.14 अश्विमानण् (4.4.126)

सूत्रार्थः- अश्विमत् शब्द से अण् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण- अश्विमत् शब्द से अण्-प्रत्यय का विधान करने के लिए ये सूत्र आचार्य ने बनाया।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे अण्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है, अश्विमान् प्रथमा एकवचनान्त पद और अण् भी प्रथमैकवचनान्त पद। यहाँ भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि विषयसप्तम्यन्तपद, ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्तपद के अनुवृत्ति होती है। तद्धिताः, प्रत्ययाः, और परश्च से तीनपद भी यहाँ अधिकृत है। तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः सूत्र से यहाँ तद्वान् प्रथमान्त पद, आसाम् षष्ठीबहुवचनान्त पद, उपधानः प्रथमान्त पद, मन्त्रे सप्तम्येकवचनान्त पद, इति अव्ययपद, इष्टकासु सप्तमीबहुवचनान्त पद, लुक् प्रथमान्त पद, च अव्ययपद और मतोः षष्ठ्येकवचनान्त पदों की यहाँ अनुवृत्ति हुई। यहाँ मतु-पद से मतुप्-प्रत्यय का बोध होना चाहिए। अतरू पदयोजना ऐसे हुई - तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु (वाच्यासु) अश्विमान् प्रातिपदिकात् परः तद्धितः अण् प्रत्ययः छन्दसि मतोः लुक् च इति। अर्थात्– उपधान मन्त्र समानाधिकरणवाले प्रथमासमर्थ मतुबन्त अश्विमान् प्रातिपदिक से षष्ठी के अर्थ में ईट का अभीधेय होने पर वेद विषय में अण प्रत्यय मतुप् प्रत्यय का लुक् हो जाता है।

उदाहरण- आश्विनीः उपदधाति।

सूत्रावतरण- अश्व-शब्दः अस्मिन् मन्त्रे अस्ति इति अश्विमान्। अश्विमत्-प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अण्-प्रत्यय और मतुप् का लुक होकर इनण्यनपत्ये सूत्र से प्रकृतिवद्भाव होकर अश्विन् अण् इस स्थिति में अण्-प्रत्यय के अन्त्य णकार का लोप होने पर अश्विन् अ इति, तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से अश्विन्-शब्द के आदी अकार को वृद्धी आकार होकर आश्विन् अ ऐसा होने पर सभी वर्णसम्मेलन से निष्पन्न आश्विन शब्द के अण्-प्रत्ययान्त होने पर टिड्-ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः सूत्र से ङीप्-प्रत्यय होकर ङीप्-प्रत्यय के आदि ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा और पकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से पकार और ङकार का लोप होने पर आश्विन ई इस स्थिति में आश्विन-शब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होकर उसके अन्त्य अकार का यस्येति च सूत्र से लोप होकर सभी वर्ण मिलाकर आश्विनी बना आश्विनी शब्दस्वरूप के ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में

टिप्पणी

स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर द्वितीयाबहुवचन की विवक्षा में शस्-प्रत्यय के होने पर शस्-प्रत्यय के आदि शकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से इत्संज्ञक शकार का लोप होने पर आश्विनी अस् इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से ईकार और अकार के स्थान पर पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेश होकर ईकार होने पर आश्विनी स् हुआ और इस समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उसकी पदसंज्ञा होकर उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु- आदेश और अनुबन्धलोप होकर आश्विनी र् हुआ । अब समुदाय के अन्त्य रु के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश होने पर सर्ववर्णसम्मेलन से **आश्विनीः** रूप सिद्ध होता है।

23.15 समुद्राभ्राद्घः (4.4.118)

सूत्रार्थः- वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्र प्रातिपदिक से परे तद्धित घ प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण- वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्रशब्द से भवे छन्दसि सूत्र से यत्-प्रत्यय प्राप्त होने पर उसको बाधकर घप्रत्यय के विधानार्थ ये सूत्र आचार्य ने बनाया।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे घ-प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में समुद्राभ्राद् पञ्चमी एकवचनान्त पद और घः प्रथमा एकवचनान्त पद है। समुद्रश्च अभ्रश्च समुद्राभ्रम्, तस्मात् समुद्राभाद् इति समाहारद्वन्द्वः। इस सूत्र में भवे छन्दसि सूत्र से भवे सप्तम्यन्त पद, छन्दसि सप्तम्यन्त पद, तत्र साधुः सूत्र से तत्र त्रल्प्रत्ययान्त पद और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पद की अनुवृत्ति हुई। तद्धिताः, प्रत्ययः परश्च पदत्रय का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार से पद योजना हुई- छन्दसि तत्र भवे समुद्राभ्रात् प्रातिपदिकात् परः घः तद्धितः प्रत्ययः इति। उसके बाद सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्र प्रातिपदिक से परे तद्धित घ प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्- समुद्रियाः।

सूत्रार्थसमन्वयः- समुद्र शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होकर 'समुद्रे भवः' विग्रह में प्रकृतसूत्र से घप्रत्यय होने पर समुद्र घ इति स्थिति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से घ-प्रत्यय के स्थान पर इय्-आदेश होकर समुद्र इय् अ इस स्थिति में समुद्रशब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा और तदन्त्य अकार का यस्येति च सूत्र से लोप होकर सर्ववर्णसम्मेलन होने पर समुद्रिय बना । अब इस शब्द की स्त्रीत्वविवक्षा होने से अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप्-प्रत्यय तथा टाप्प्रत्यय के आदी टकार की चुटू सूत्र से इत्संज्ञा और पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से टकार और पकार का लोप होने पर समुद्रिय आ इति स्थिति में सवर्णदीर्घ होकर

समुद्रिया हुआ। अब इस शब्द के टाप्प्रत्ययान्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार से वर्तमान अर्थ में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङेसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में जस् तथा जस्-प्रत्यय के आदि जकार की चुटू सूत्र से इत्सज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से उस इत्संज्ञक जकार का लोप होने पर समुद्रिया अस् इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से आकार और अकार के स्थान पर पूर्वसवर्णदीर्घएकादेशआकार के होकर सर्ववर्णसम्मेलन से समुद्रियास् ऐसा होकर समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उसकी पदसंज्ञा हुई तथ उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु- आदेश और अनुबन्धलोप होकर समुद्रिया र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश होकर सर्ववर्णसम्मेलन से **समुद्रियाः** रूप सिद्ध होता है।

23.16 पाथोनदीभ्यां ङ्यण् (4.4.111)

सूत्रार्थः– वेदविषय में पाथस् और नदी अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से 'तत्र भवः' इस अर्थ में ङ्यण् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणम्– 'तत्रा भवः' इत्यस्मिन्नर्थे पाथश्शब्दात् नदीशब्दाच्च् ङ्यण्-प्रत्ययस्य विधानार्थं सूत्रमिदं प्रणीतमाचार्येण।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इससे ङ्यण-प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में पाथोनदीभ्याम् पञ्चमी द्विवचनान्त पद, ङ्यण् प्रथमैकवचनान्त पद है। यहाँ ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्येकवचनान्त पद, भवे छन्दसि सूत्र से भवे और छन्दसि सप्तम्येकवचनान्त दोनों पद अनुवृत्त हुए। तद्धिताः, अनुपसर्जनात्, प्रत्ययः परश्च का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना हुई- छन्दसि अनुपसर्जनात् पाथोनदीभ्यां प्रतिपदिकात् परः ङ्यण् तद्धितः प्रत्ययः इति। यहाँ विभक्तिविपरिणाम से अनुपसर्जनाभ्यां प्रातिपदिकाभ्याम् ऐसा रूप होता है। विभक्तिविपरिणाम से बना रूप तद्धितः प्रथमैकवचनान्त पद यहाँ ङ्यण् का विशेषण है। अतरू सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में पाथस् और नदी अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से तद्धित अर्थ में ङ्यण् प्रत्यय होता है। अर्थात् प्रकृतसूत्र से पाथस् और नदी शब्दों में प्रकृतसूत्र से ङ्यण् तद्धितप्रत्यय पर में होता है।

उदाहरण- पाथ्यः।

सूत्रार्थसमन्वय- पाथ्स्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा' पाथसि भवः' इस अर्थ में प्रकृतसूत्र से ङ्यण्-प्रत्यय और उस ङ्यण्-प्रत्यय के आदि डकार की चुटू सूत्र से इत्संज्ञा, हलन्त्यम् सूत्र से णकार की इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से उन इत्संज्ञक डकार णकार का लोप होकर पाथस् य इस स्थिति में पाथस्-शब्द के अस्-भाग की अचोऽन्त्यादि टि सूत्र से टिसंज्ञा होकर ङ्यण्-प्रत्यय डित् होने से टेः सूत्र से उस टिसंज्ञक अस् का लोप होने पर पाथ् य इस स्थिति में सर्ववर्णसम्मेलन से निष्पन्न पाथ्य

टिप्पणी

शब्द के तद्धितप्रत्ययान्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में वर्तमान अर्थ में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमैकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय के होने पर पाथ्य सु इस स्थिति में में पाणिनीयप्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होकर पाथ्य स् ऐसा बनने पर समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उस पदसंज्ञा होने पर उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु आदेश और अनुबन्धलोप होकर पाथ्य र् ऐसा होने से समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश और सर्ववर्णसम्मेलन से पाथ्यः रूप सिद्ध हुआ।

पाठगत प्रश्न-23.2

8. छन्दसि घस् सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?
9. छन्दसि घस् सूत्र में ऋतोः पद की अनुवृत्ति कहाँ से हुई?
10. छन्दसि घस् सूत्र किसका अपवाद है?
11. सोमशब्द से यप्रत्यय किससे होता है?
12. सोमशब्द से यप्रत्यय किस अर्थ में होता है?
13. मयडर्थक कौन से प्रत्यय हैं?
14. विचार्यमाण वाक्यों के टी के प्लुत किस सूत्र से होता है?
15. बह्वादि प्रतिपदिकों को नित्य ङीष् किस सूत्र से होता है?
16. असुरशब्द से अण्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
17. अश्विमत् शब्द में अण्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
18. समुद्र शब्द और अभ्रशब्द में किस सूत्र से घ- प्रत्यय होता है?
19. पाथस् शब्द और नदीशब्द में किस सूत्र से ङ्यण्- प्रत्यय हुआ?

पाठसार

वेदविषय में पादपूरण अर्थ में प्र, सम्, उप, उत् इन उपसर्गों को द्वित्व होता है। ''छन्दसीरः'' इवर्णान्त और रेफान्त प्रतिपदिकों से पर के मतुप् के मकार के स्थान पर व् होता है। ''अनो नुट्'' सूत्र से अन् अन्त वाले मतुप् के नुट होता है। नान्त के परे घ को नुडागम

होता है ''नाद्धस्य'' सूत्र से। वेद विषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार को रु होता है विकल्प से रु भी। शब्द के स्थान पर प्लुत होता है आरम्भ में। विचार्यमाणानाम् सूत्र से विचार्यमाण वाक्यों के टी के स्थान पर प्लुत होता है। नित्यं छन्दसि सूत्र से बह्वादि प्रतिपदिकों से नित्य ङीष् होता है। मायायामण् सूत्र से असुरशब्द से अण्-प्रत्यय होता है। अश्विमानण् सूत्र से अश्विमत् शब्द से अण्- प्रत्यय होता है। समुद्राभ्राद्धः सूत्र से समुद्र शब्द और अभ्रशब्द से घ-प्रत्यय होता है। पाथोनदीभ्यां ड्यण् सूत्र से पाथस् और नदीशब्द से ड्यण्-प्रत्यय होता है।

पाठान्त प्रश्न

1. प्रसमुपोदः पादपूरणे सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. हरिवते रूप को सिद्ध कीजिए।
3. अक्षण्वन्तः रूप को सिद्ध कीजिए।
4. नाद्धस्य सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. भूवो विश्वेषु सवनेषु यहाँ भुवस् के सकार के स्थान पर ''भुवश्च महाव्याहृतेः'' सूत्र से रेफ क्यों नहीं हुआ।
6. ओमभ्यादाने सूत्र का अर्थ बताइए।
7. ऋत्वियः रूप की सिद्धि करो कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. प्र सम् उप उत् इसको द्वित्व पादपूरण की अवस्था में होता है।
2. वेद विषय में इवर्णन्त और रेफान्त प्रतिपदिकों से मतुप् के म के स्थान पर व् ''छन्दसीरः'' सूत्र से होता है।
3. अक्षण्वन्तः में नुडागम ''अनो नुट्'' सूत्र से।
4. नाद्धस्य सूत्र से नान्त से परे घ को नुडागम होता है।
5. अम्नरेव का वैकल्पिक रूप अम्न एव ही होगा।
6. तीन महाव्याहृतियां है और वे भूः, भुवः, स्वः है।
7. मन्त्र के आरम्भ में ओम् शब्द को प्लुत होता है।

टिप्पणी

23.2

8. घस्प्रत्यय।

9. ऋतोरण् सूत्र से अनुवृत्ति हुई।

10. ऋतोरण् सूत्र का अपवाद है।

11. मये च सूत्र से।

12. मयट्- अर्थ में।

13. आगतविकारावयाप्रकृता:

14. विचार्यमाणानाम्।

15. नित्यं छन्दसि।

16. मायायामण्।

17. अश्विमानण्।

18. समुद्राभ्राद्धः।

19. पाथोनदीभ्यां ड्यण्।

--तेइसवां पाठ समाप्त--